क्यों बरनों हक सूरत

क्यों बरनों हक सूरत, अब लों कहीं न किन।
ए झूठी देह क्यों रहे, सुनते एह बरनन।।

बरनन आसिक कर ना सके, और कोई पोहोंचे न आसिक बिन।
हक जाहेर क्यों होवहीं, देखातहीं उड़े तन।।

हक इस्क आग जोरावर, इनमें मोमिन बसत।
आग असल जिनों वतनी, यामें आठों जाम अलमस्त।।

आसिक अरवा कहावहीं, तिन मुख विरह ना निकसत।
जब दिल विरह जानिया, तब आह अंग चीर चलत।।

महामत कहें मामिनों पर, करी हांसी हुकमें।
ना तो अरवाहें इत क्यूं रहें, बेसक होए हक से।।